CS (Main) E... ,2014

C–DRN–N–L–OBJB

MAITHILI

PAPER—II

(LITERATURE)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

There are EIGHT questions divided in two Sections.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Question Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI (Devanagari script).

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION—A

1. काव्य-वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 10×5=50

(a) प्राची दिशि भय गेल प्रकाश। नव नृप रविक उदय उल्लास॥
अरुण वसन शुभ पहिरि दिनेश। मंच उदय-गिरि बैसला बेश॥
चहु दिशि मंगल गाब विहंग। बाजए घंटा शंख मृदंग॥
शिव-शिव ध्वनि भल हो चहु ओर। मागध सूत विरूद पढ़ शोर॥
गाब भक्त सभ भैरव राग। सुनि-सुनि सभकाँ बड़ अनुराग॥
कमल प्रफुल्लित मन्द समीर। बहय सुखद सौरभयुत धीर॥

(b) सुइ लय बेधिअ गाँथिअ ताग
हाथ छुबिअ तओं हाथहिं लाग
गरजि सघन घन बरिसय बारी
तैं फनिपति फना देलन्हि पसारी
लागल झड़ी भुलल सब दीग
पशु-पक्षी सब पड़ल अदीग
सूर्यसुधाकर खोजलौं ने पाबिअ
कमलकुमुद निशिवासर जानिअ।

(c) सीखल कत भाषा, लीखल जत लिपि प्रचलित जग बीच।
परिचित विविध देश व्यवहारक ऊँच रहौ वा नीच॥
भाषण, लेखन, वाचन, गायन अभिव्यक्ति हित उक्ति।
सुभाषितक उर हार पहिरि श्रुति-सूक्त सूक्ति रस उक्ति॥
तर्क-वितर्क वाद-संवादहु अनुवादहुमे दक्ष।
रहल कसरि नहि, असरि गुरुकुलक एतय भेल प्रत्यक्ष॥

(d) चाँद सार लए मुख घटना करू
लोचन चकित चकोरे।
अमिय धोए आँचरे जनि पोछल
दह दिस भेल उजोरे॥
कामिनी कोने गढ़ली।
रूप सरूप मोहि कहइते असम्भव
लोचन लागि रहली॥
गुरु नितम्भ भरे चलए न पारए
माझ खीनिम निमाइ।
भांगि जाइति मनसिजे धरि राखलि
त्रिबलि लता अरुझाइ॥

(e) तोड़ि कँ हरिसिंहदेवक डाँड़
कान्हि जँ बौआ बिआहथि मेम
महाश्वेता बहुरिआ
चिनमार पर ओ आबि
बिहुँसि लगती गोसाउनिकें गोड़
तें अहाँ की छाड़ि कँ ई माटि
पड़ाएब चल जएब मोरङ दीस।

2. (a) "'मिथिला भाषा रामायण'क 'सुन्दरकाण्ड'मे हनुमानक चरित वर्णित अछि।" एहि कथनक सार्थकता सिद्ध करू। 20

(b) "'महाभारत'क विराट पर्वमे वर्णित पाण्डव लोकनिक वनवासोत्तर विराट राजाक आश्रयमे अज्ञातवासक समयक वृत्तांत पर 'कीचक वध' महाकाव्यक कथावस्तु आधारित अछि"—समीक्षा करू। 15

(c) मैथिली काव्य-साहित्यमे 'कृष्णजन्म'क महत्त्व पर प्रकाश दिअ। 15

3. (a) "यात्रीकें सामान्यतः मार्क्सवादी ओ प्रगतिशील कवि कहल जाइत छन्हि"—'चित्रा'क आधार पर एहि उक्ति पर विचार करू। 20

(b) समकालीन मैथिली कविताक आधार पर मायानन्द मिश्रक कवितासँ परिचय कराउ। 15

(c) लालदासक 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण'क नामकरण पर विचार करू। 15

4. (a) "गोविन्ददासक काव्य नारिकेल फलक सदृश रहितहुँ श्रुति-माधुर्यसँ परिपूर्ण अछि।" पठित अंशक आधार पर एहि कथनक मूल्यांकन करू। 20

(b) "विद्यापतिक पदावली गीतकाव्य थिक जे हिनक भावाभिव्यक्तिक सूक्ष्मता राग-काललयाश्रित कोमलकान्त पदावली प्रसादपूर्ण माधुर्यसँ ओतप्रोत अछि।" पठित अंशक आधार पर युक्तिपूर्वक विचार करू। 15

(c) "सुमनजीक रचनामे प्राचीनता ओ नवीनताक विलक्षण समन्वय भेल अछि"—युक्तियुक्त विवेचन करू। 15

SECTION—B

5. निम्नलिखित कथ्यक अभिव्यंजनागत वैशिष्ट्यकें निर्दिष्ट करैत सन्दर्भ-सहित व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 10×5=50

(a) अइ टोकमे कोनो तेहन शक्ति रहैक जकरा नेनहिसँ मानबाक संस्कार जमि गेल रहैक। कोनो अनट-बिनट काज करैत काल, कोनो अनुचित करैत काल, इएह टोक नेनासँ सुनने रहए। आ तकरा बाद फेर आगाँ किछु कहबाक आ कि करबाक साहस कहियो ने होइक। आइओ ने भेलैक। नवीन पौरुषक दर्प उतरि गेलैक। हठात् घोर लज्जा घेरि लेलकै।

(b) आजुक युगमे यदि क्यो सोड़हो आना भाग्यवादी बनि जाय आ हिया हारिक' अपनाकें भगवानक इलाका लगा देअय, त लोक ओकरा बताहे कहतैक कि! मुदा हमरा सनक भेष-भुषावाला लोक यदि समाजमे बताह कहाब' लागय तँ भरिसक संसारमे बताहक संख्या सभसँ बेसी भ' जयतैक। की सरिपहुँ लोक जानि-बुझि क' अपन बगय खराप बना लैए?

(c) पूर्णिमाक चान्द अमृत पूरल अइसन मुह। श्वेत पंकजकाँ दल भ्रमर बयिसल अइसन आँषि· काजरक कल्लोल अइसन भञुह· गथले फुले नर्मदाक शलाका पूजल अइसन षोम्पा· पखाक पल्लव अइसन अधर· कनिअराक कर अइसन नाक· सिन्दुर मोति लोटाएल अइसन दान्त। वेतक साट अइसन वाँह· पारिजातक पल्लव अइसन हाथ।

(d) स्वांग रचब हमर जीवन आ जीविका भ' गेल अछि। बीस बर्ख पहिने ई सत्य हमरा बुझवामे आबि गेल छल जे जीबाक अछि; तँ स्वांग रच' पड़त, कोनो-ने-कोनो स्वांग-नीक लोकक वा अधलाह लोकक! बुझवामे आबि गेल छल जे सभ लोक कोनो-ने-कोनो स्वांग रचैत अछि। जे हम छी, जे हमर असली व्यक्तित्व अछि, हमर असली चेहरा, से व्यक्त कयने, व्यक्त करैत रहलासँ ने हमरा अन्न-पानि भेटि सकैत अछि, ने ठाढ़ होयबाक लेल कोनो ओसारा, कोनो आङन!

(e) देबहाक धारामे ओ राजहंस कत्ते सिनेहक संग अपना हंसिनीक संग ग्रीवामे चंचु-आघात कए रहल अछि, लगक साहोड़क गाछ पर बैसल पंडुक दम्पति कोना अपना कलकुंजनसँ वातावरणमे मधु घोरि रहल अछि। तैयो आँहाँ हमरा एहिठाम आबक कारण पूछइ छी। एत्तेक दिन व्याह भेना भेल आँहाँ गौनाक नाम नहि लेलहुँ। आँहाँ भने ठमकल रहलहुँ किन्तु समय तऽ नहि ठमकल रहल। हम पूछए आएल छी जे हम कोन अपराधेँ उपेक्षिता भए रहल छी?

6. (a) नारी हृदयक संवेदनशीलताक चित्रणमे किरणजी कतेक दूर धरि सफल भेल छथि? 'मधुरमनि' कथाक आधार पर सिद्ध करू। 20

(b) " 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यासमे ललित मानव स्वभावक नैसर्गिक प्रवृत्ति ओ भावनाकेँ जाहि प्रकारेँ प्रधानता देल अछि से हुनक स्वस्थ दृष्टिकोणक परिचायक थिक।" एहि कथनक समीक्षा करू। 15

(c) "हरिमोहन झाक रचनामे व्यंग्य-विनोद आ पांडित्यक त्रिवेणी प्रवाहित होइत अछि।" एहि उक्तिक सार्थकता देखाउ। 15

7. (a) " 'वर्णरत्नाकर'क द्वितीय कल्लोलमे शृंगार रसक विविध सामग्रीक चर्चा करब कविक उद्देश्य बुझि पड़ैत अछि"—प्रमाणित करू। 20

(b) " 'साँझक गाछ' कथामे जीवनक संघर्ष वाह्य एवं अभ्यन्तर दुनूक समावेश पूर्णरूपेण देखवामे अबैत अछि।" एहि कथनक समीक्षा करू। 15

(c) " 'वर्णरत्नाकर'केँ काव्य नहि काव्योपयोगी कहल जाइत अछि"—सयुक्ति प्रतिपादन करू। 15

8. (a) 'लोरिक विजय' उपन्यासमे तत्कालीन मिथिलाक छोट-छोट सामन्तक अत्याचार ओ दुराचारसँ सामान्य लोकक जीवन अस्त-व्यस्त छल। लोरिक ओहि सामान्य जनजीवनमे उत्पीड़नजन्य आक्रोशकेँ सहन नहि कए सकलाह आ हुनका लोकनिकेँ संगठित कए ओहि अत्याचारी सामन्तक विरुद्ध युद्ध कएलनि—एहि विषय पर आधारित एकर कथावस्तुक मूल्यांकन करू। 20

(b) " 'भफाइत चाहक जिनगी' नाटकमे नाटककार एक शिक्षित बेरोजगार युवकक चरित्रक कर्मठता ओ संघर्षक चित्रण कएलनि अछि"—विवेचन करू। 15

(c) "मैथिली कथा-साहित्यक भव्य ललाट पर राजकमल-ललित आ मायानन्दकेँ त्रिपुंडक रूपमे देखल जाइत अछि"—एकरा युक्तियुक्त पल्लवित करू। 15

★ ★ ★